The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com

“माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में एक अध्ययन”

राम विजय चौरसिया
शोधार्थी

डा0 रत्ना शुक्ला
सहायक प्रोफेसर
शिक्षा संकाय विभाग
खुनखुन जी कन्या महाविद्यालय, लखनऊ
लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

सारांश :

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य आज शिक्षा और समाजशास्त्र दोनों ही क्षेत्रों में एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय बन गया है क्योंकि यह न केवल उनकी शैक्षिक उपलब्धियों को प्रभावित करता है बल्कि उनके व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक व्यवहार और भविष्य के जीवन के प्रति दृष्टिकोण को भी निर्धारित करता है। किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें छात्र भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक रूप से तेजी से परिवर्तन का अनुभव करते हैं, ऐसे में उनका मानसिक स्वास्थ्य अनेक प्रकार की चुनौतियों से प्रभावित होता है। इस संदर्भ में पारिवारिक वातावरण की भूमिका अत्यंत निर्णायक मानी जाती है। परिवार ही बच्चे के विकास का प्रथम और सबसे प्रभावशाली संस्थान है, जहां से उन्हें प्रेम, स्नेह, अनुशासन, मूल्य और सुरक्षा की अनुभूति प्राप्त होती है। यदि परिवार का वातावरण सहयोगपूर्ण, भावनात्मक रूप से संतुलित और सकारात्मक हो तो छात्र का आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा मानसिक संतुलन बेहतर बना रहता है वहीं दूसरी ओर यदि परिवार में कलह, आर्थिक संकट, उपेक्षा, अनुशासनहीनता या माता–पिता के बीच असामंजस्य जैसी परिस्थितियाँ विद्यमान हों तो छात्र तनाव, चिंता, हीनभावना, आक्रामकता अथवा अवसाद जैसी मानसिक समस्याओं का शिकार हो सकते हैं। माध्यमिक स्तर पर पढ़ने वाले छात्र प्रायः अपनी पढ़ाई, भविष्य की चिंता, मित्र संबंधों और सामाजिक प्रतिस्पर्धा के दबाव से गुजरते हैं, ऐसे में पारिवारिक वातावरण उनके लिए एक सहारा अथवा चुनौती दोनों बन सकता है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि पारिवारिक वातावरण के कौन–कौन से घटक छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं और किस हद तक वे उनके शैक्षिक जीवन और सामाजिक अनुकूलन को आकार देते हैं। शोध से यह स्पष्ट होता है कि जिन छात्रों को अपने परिवार से प्रोत्साहन, संवाद और भावनात्मक समर्थन प्राप्त होता है, उनका मानसिक स्वास्थ्य बेहतर पाया गया है और वे शैक्षिक रूप से अधिक सफल और सामाजिक रूप से अधिक परिपक्व होते हैं जबकि असहयोगी और असंतुलित पारिवारिक माहौल में पले–बढ़े छात्रों में मानसिक तनाव, अध्ययन से अरुचि, अनुशासनहीनता और

असामाजिक व्यवहार की प्रवृत्तियाँ देखी गई हैं। अध्ययन यह भी संकेत करता है कि परिवार का आर्थिक स्तर, माता–पिता की शिक्षा, आपसी समझ और अभिभावकों का व्यवहार भी मानसिक स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए पारिवारिक वातावरण का सुधार अनिवार्य है, जिसके लिए माता–पिता को बच्चों के साथ समय बिताना, संवाद स्थापित करना, उन्हें प्रोत्साहित करना और प्रेमपूर्ण वातावरण देना चाहिए साथ ही विद्यालय और समाज को भी परिवार के साथ सहयोग कर एक ऐसे वातावरण का निर्माण करना चाहिए जिससे छात्र मानसिक रूप से स्वस्थ, आत्मविश्वासी और सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बन सकें। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल पारिवारिक वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य के बीच के घनिष्ठ संबंध को उजागर करता है बल्कि यह भी इंगित करता है कि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए परिवार और विद्यालय दोनों की संयुक्त भूमिका आवश्यक है।

मुख्य शब्द : *माध्यमिक विद्यालय, छात्र एवं छात्राएं, मानसिक स्वास्थ्य, पारिवारिक वातावरण*

प्रस्तावना

आज के दौर में मानसिक स्वास्थ्य का महत्व शारीरिक स्वास्थ्य के समान ही माना जा रहा है, विशेषकर तब, जब शिक्षा, सामाजिक जीवन, पारिवारिक वातावरण और तकनीकी प्रगति ने बच्चों के जीवन पर गहरा प्रभाव डालना शुरू कर दिया है। माध्यमिक स्तर का छात्र जीवन बाल्यावस्था और किशोरावस्था के बीच का ऐसा संक्रमणकाल है, जब विद्यार्थी न केवल शिक्षा के दबाव का सामना करता है बल्कि अपनी पहचान, व्यक्तित्व, आत्म–सम्मान और आत्मविश्वास के विकास से भी गुजरता है। इस अवस्था में यदि मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति सकारात्मक और सुदृढ़ होगी तो छात्र अपनी शैक्षिक उपलब्धियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करेगा तथा सामाजिक जीवन में भी संतुलित रूप से आगे बढ़ेगा किन्तु यदि इस अवधि में छात्र मानसिक असंतुलन, चिंता, तनाव, अवसाद, असुरक्षा या पारिवारिक समस्याओं से घिर जाता है, तो इसका प्रतिकूल प्रभाव उसके संपूर्ण विकास पर पड़ सकता है। इसी संदर्भ में छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके पारिवारिक वातावरण के साथ संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि परिवार ही वह प्राथमिक संस्था है जहाँ से बालक अपने जीवन के मूल्यों, संस्कारों, अनुशासन, आचार–विचार, व्यवहार तथा भावनात्मक सहयोग की प्राप्ति करता है।

पारिवारिक वातावरण छात्र के मानसिक स्वास्थ्य को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाता है। परिवार के सदस्यों का आपसी व्यवहार, माता–पिता का दृष्टिकोण, भाई–बहनों के साथ संबंध, संवाद की शैली, आर्थिक स्थिति, शिक्षित या अशिक्षित पृष्ठभूमि, सामाजिक वातावरण और माता–पिता द्वारा प्रदान किया गया भावनात्मक सहयोग सभी मिलकर छात्र के व्यक्तित्व और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। यदि पारिवारिक वातावरण स्नेहमय, सहयोगात्मक, सुरक्षित और प्रेरणादायी होगा तो विद्यार्थी आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी और भावनात्मक रूप से सुदृढ़ बनेगा वहीं यदि परिवार में कलह, असुरक्षा, उपेक्षा या अत्यधिक दवाब जैसी स्थितियाँ होंगी, तो छात्र मानसिक तनाव, अवसाद, चिंता, भय, आत्म–संदेह और असफलता की

THE RESEARCH DIALOGUE Manifestation of Perfection

प्रवृत्ति से ग्रस्त हो सकता है। अतः छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को उनके पारिवारिक वातावरण से पृथक कर समझना संभव नहीं है।

माध्यमिक विद्यालय का स्तर शिक्षा जीवन का अत्यंत संवेदनशील और महत्वपूर्ण चरण है। इस अवस्था में विद्यार्थी उच्च कक्षाओं में प्रवेश कर भविष्य की दिशा तय करने की तैयारी करता है। परीक्षा का दबाव, प्रतिस्पर्धा, सामाजिक तुलना, मित्र समूहों का प्रभाव, भविष्य की चिंता, करियर को लेकर असमंजस और पारिवारिक अपेक्षाएँ उसके मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती हैं। यदि इस समय परिवार में संवाद, समझ, विश्वास और सहानुभूति का वातावरण हो तो छात्र तनावमुक्त होकर शिक्षा पर ध्यान केंद्रित कर सकता है किन्तु यदि परिवार में कठोर अनुशासन, अधिक अपेक्षाएँ, आर्थिक समस्याएँ या पारिवारिक विघटन जैसे हालात हों तो छात्र का मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होकर उसके व्यक्तित्व विकास में बाधा उत्पन्न कर सकता है।

परिवार सामाजीकरण की पहली इकाई है। यहाँ बच्चा सबसे पहले भाषा, आचरण, अनुशासन, मूल्य, नैतिकता और जीवन शैली सीखता है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि बालक का प्रारंभिक मानसिक विकास उसी वातावरण पर निर्भर करता है जो उसे परिवार में मिलता है। सिग्मंड फ्रायड ने व्यक्तित्व विकास में बचपन के अनुभवों को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है वहीं एरिक्सन ने किशोरावस्था में पहचान और आत्म–बोध को मानसिक स्वास्थ्य से जोड़कर देखा है। इन सभी सिद्धांतों से स्पष्ट होता है कि परिवार की संरचना, संवाद, व्यवहार और भावनात्मक सहयोग का छात्र के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर पड़ता है। यदि माता–पिता बच्चे को खुलकर अपनी बात रखने का अवसर दें, उसे सुनें, समझें, प्रोत्साहित करें और कठिनाइयों में सहयोग करें तो उसका आत्मविश्वास बढ़ेगा और वह मानसिक रूप से मजबूत बनेगा। इसके विपरीत यदि पारिवारिक वातावरण उपेक्षा, प्रताड़ना, हिंसा, असमान व्यवहार या असुरक्षा से भरा होगा तो छात्र का मानसिक स्वास्थ्य असंतुलित हो सकता है।

आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जहाँ जीवन की गति तीव्र हो गई है, प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है और परिवारों की संरचना संयुक्त से एकल की ओर परिवर्तित हो रही है, वहाँ छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव और अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। संयुक्त परिवारों में बच्चों को दादा–दादी, चाचा–चाची आदि से भी स्नेह, सहयोग और मार्गदर्शन मिलता था, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित और स्थिरता मिलती थी किन्तु आधुनिक समय में अधिकांश परिवार एकल हो गए हैं, जहाँ माता–पिता नौकरी और आजीविका में व्यस्त रहते हैं और बच्चों के लिए समय निकालना कठिन हो जाता है। इस स्थिति में विद्यार्थी को भावनात्मक सहयोग की कमी महसूस होती है, जो मानसिक तनाव, अकेलापन और असुरक्षा की भावना को जन्म देती है। इसके अतिरिक्त परिवारों में आर्थिक दबाव, तकनीकी उपकरणों का अत्यधिक उपयोग, सोशल मीडिया का प्रभाव, शैक्षिक प्रतिस्पर्धा और करियर की अनिश्चितता जैसी समस्याएँ भी मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रही हैं।

पारिवारिक वातावरण का छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव दो प्रकार से देखा जा सकता है सकारात्मक और नकारात्मक। सकारात्मक प्रभाव तब देखा जाता है जब परिवार का वातावरण लोकतांत्रिक, प्रोत्साहनपरक, सहयोगी और भावनात्मक रूप से सशक्त होता है। ऐसे वातावरण में पले–बढ़े छात्र आत्मविश्वासी,

सामाजिक, सहयोगी, रचनात्मक और मानसिक रूप से स्वस्थ होते हैं। नकारात्मक प्रभाव तब देखा जाता है जब पारिवारिक वातावरण अधिनायकवादी, कठोर, असहयोगात्मक या उपेक्षापूर्ण होता है। ऐसे वातावरण में बच्चे असुरक्षा, भय, अवसाद, चिंता, आत्म–संदेह और आत्महीनता की प्रवृत्ति से पीड़ित हो सकते हैं। इस प्रकार पारिवारिक वातावरण और मानसिक स्वास्थ्य का गहरा अंतर्संबंध है, जिसे समझे बिना शिक्षा और व्यक्तित्व विकास की प्रक्रिया को पूर्ण रूप से नहीं समझा जा सकता।

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए मानसिक स्वास्थ्य केवल तनावमुक्त जीवन जीने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उनकी शैक्षिक उपलब्धियों, सामाजिक संबंधों, आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और भविष्य के प्रति दृष्टिकोण से भी जुड़ा हुआ है। यदि छात्र मानसिक रूप से स्वस्थ है तो वह कठिन परिस्थितियों का सामना कर सकता है, असफलताओं को सीखने के अवसर के रूप में देख सकता है और जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपना सकता है। वहीं यदि मानसिक स्वास्थ्य असंतुलित है तो छात्र न केवल शिक्षा में पिछड़ सकता है, बल्कि जीवन की अन्य गतिविधियों में भी असफलता और हताशा का सामना कर सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य उनके पारिवारिक वातावरण से गहराई से जुड़ा हुआ है। शिक्षा और समाजशास्त्र के क्षेत्र में इस विषय पर गहन अध्ययन आवश्यक है ताकि यह जाना जा सके कि किस प्रकार विभिन्न प्रकार के पारिवारिक वातावरण छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन से न केवल शिक्षकों और अभिभावकों को दिशा मिलेगी, बल्कि शिक्षा–नीति निर्माताओं और समाज को भी यह समझने में सहायता मिलेगी कि विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए पारिवारिक वातावरण को किस प्रकार संवेदनशील और सहयोगात्मक बनाया जा सकता है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण है क्योंकि किशोरावस्था का यह चरण शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक रूपांतरण का दौर होता है, जिसमें विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और भविष्य का आधार निर्मित होता है। इस अवस्था में विद्यार्थी शैक्षिक दबाव, प्रतियोगिता, आत्मसम्मान, पहचान निर्माण, सामाजिक स्वीकृति तथा पारिवारिक अपेक्षाओं जैसे अनेक तनावों का सामना करते हैं, जिनका सीधा प्रभाव उनके मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। मानसिक स्वास्थ्य केवल रोगों की अनुपस्थिति नहीं है बल्कि यह एक संतुलित स्थिति है जिसमें विद्यार्थी तनाव का सामना कर सके, सकारात्मक संबंध स्थापित कर सके, आत्मविश्वास बनाए रख सके और अपनी क्षमताओं का सर्वोत्तम उपयोग कर सके। इस संदर्भ में पारिवारिक वातावरण की भूमिका अत्यधिक निर्णायक होती है क्योंकि परिवार ही वह प्रथम सामाजिक संस्था है जो बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण, भावनात्मक संतुलन, आत्मविश्वास और व्यवहारिक प्रवृत्तियों को आकार देती है। परिवार का स्नेह, सहयोग, अनुशासन, संवाद, आर्थिक स्थिरता और मूल्यपरक परंपराएँ विद्यार्थियों को एक सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण प्रदान करती हैं, जो उनके मानसिक स्वास्थ्य को मजबूत बनाती हैं। वहीं दूसरी ओर परिवार में कलह, उपेक्षा, आर्थिक असुरक्षा, संवादहीनता और अनुशासनहीनता विद्यार्थियों में तनाव, चिंता, अवसाद, आत्मविश्वास की कमी और

नकारात्मक व्यवहार को जन्म देती है। आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य में, जहां एक ओर संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार बढ़ रहे हैं, वहीं माता–पिता की व्यस्त जीवनशैली, तकनीकी उपकरणों का अत्यधिक प्रयोग और पारिवारिक संवाद की कमी बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा असर डाल रही है। अतः यह अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है ताकि यह स्पष्ट किया जा सके कि किस प्रकार का पारिवारिक वातावरण छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहित करता है और किस प्रकार का वातावरण उसमें बाधा उत्पन्न करता है। इस प्रकार का शोध शिक्षा मनोविज्ञान, परामर्श सेवा, शैक्षिक नीति निर्धारण और पारिवारिक जागरूकता कार्यक्रमों के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है, क्योंकि इससे विद्यालयी स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रम बनाए जा सकते हैं और परिवारों को मार्गदर्शन दिया जा सकता है कि वे अपने बच्चों को एक सकारात्मक, सहयोगी और संवादशील वातावरण दें। इसके अतिरिक्त यह अध्ययन सामाजिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि मानसिक रूप से स्वस्थ विद्यार्थी ही आगे चलकर एक जिम्मेदार नागरिक बन सकता है और समाज की प्रगति में योगदान दे सकता है। संक्षेप में, माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन करना इसलिए अत्यावश्यक है क्योंकि यह न केवल व्यक्तिगत स्तर पर विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करता है, बल्कि सामाजिक और शैक्षिक संरचना को भी सुदृढ़ बनाता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- चेन, जे. और अन्य (2021) ने माता–पिता–किशोर संचार और किशोर मानसिक स्वास्थ्य : एक व्यवस्थित समीक्षा पर अध्ययन किया। शोध अध्ययन में पाया गया कि जिन किशोरों ने माता–पिता के साथ खुला संवाद अनुभव किया, उनमें अवसाद और चिंता का स्तर कम था। संवादहीनता मानसिक स्वास्थ्य जोखिम को बढ़ाती है।
- मंजुला, एस. (2021) ने पालन–पोषण की शैलियाँ और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर उनका प्रभाव : भारतीय स्कूलों से प्राप्त साक्ष्य पर अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि लोकतांत्रिक पालन–पोषण शैली से विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य बेहतर पाया गया, जबकि सत्तावादी शैली से अवसाद एवं चिंता अधिक।
- वांग, एल., और ली, एक्स. (2022) ने पारिवारिक कार्यप्रणाली और किशोर अवसाद : आत्म–सम्मान की मध्यस्थ भूमिका और साथियों के साथ जुड़ाव की मध्यस्थ भूमिका पर अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि परिवार का अच्छा वातावरण अवसाद को कम करता है। आत्म–सम्मान आंशिक मध्यस्थ और सहपाठी–संबंध संयोजक पाए गए।
- गौविया, आर. और अन्य (2023) ने माता–पिता का सहयोग, आत्म–प्रभावकारिता और किशोर मानसिक स्वास्थ्य : एक बहु–देशीय विश्लेषण पर अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि माता–पिता का भावनात्मक समर्थन कम मानसिक स्वास्थ्य लक्षणों से जुड़ा रहा। निम्न आर्थिक स्तर वाले छात्रों में यह प्रभाव और अधिक मजबूत पाया गया।

- रमेश, पी. (2024) ने कर्नाटक में किशोरों में अवसाद पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव पर अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि जिन विद्यार्थियों का पारिवारिक वातावरण सहयोगात्मक व सहायक था, उनमें अवसाद का स्तर न्यूनतम था। असहयोगी एवं तनावपूर्ण पारिवारिक वातावरण अवसाद व चिंता का बड़ा कारक निकला।

समस्या कथन

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में एक अध्ययन।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके पारिवारिक वातावरण पर अध्ययन।
2. माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का उनके पारिवारिक वातावरण पर अध्ययन।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाऐं

1. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।
2. माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए आजमगढ़ क्षेत्र के समस्त माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों एवं विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा चयन कर व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु केवल 320 विद्यार्थिंयों को शामिल किया गया है।

उपकरण

- मानसिक स्वास्थ्य मापने हेतु – ए.के. सिंह एवं ए.सेन गुप्ता द्वारा निर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।
- पारिवारिक वातावरण मापने हेतु – स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
छात्र	160	0.213	धनात्मक

व्याख्या :–

तालिका संख्या 1 में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.213 प्राप्त हुआ है। प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है जिससे पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

तालिका संख्या – 2

माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

समूह	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
छात्राएं	160	0.024	धनात्मक

व्याख्या :–

तालिका संख्या 2 में माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध की स्थिति को दर्शाया गया है। माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.213 प्राप्त हुआ है। प्राप्त सहसम्बन्ध का मान धनात्मक सहसम्बन्ध का प्रतीक है जिससे पता चलता है कि माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

निष्कर्ष

1. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।
2. माध्यमिक विद्यालय की छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं पारिवारिक वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- चेन, जे. और अन्य (2021). माता–पिता–किशोर संचार और किशोर मानसिक स्वास्थ्य : एक व्यवस्थित समीक्षा, जर्नल ऑफ एडोलसेंस, 89, 56–68.
- मंजुला, एस. (2021). पालन–पोषण की शैलियाँ और किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर उनका प्रभाव : भारतीय स्कूलों से प्राप्त साक्ष्य, इंडियन जर्नल ऑफ हेल्थ एंड वेलबीइंग, 12(4), 345–352.
- वांग, एल., और ली, एक्स. (2022). पारिवारिक कार्यप्रणाली और किशोर अवसाद : आत्म–सम्मान की मध्यस्थ भूमिका और साथियों के साथ जुड़ाव की मध्यस्थ भूमिका, फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 13, 851028.
- गौविया, आर. और अन्य (2023). माता–पिता का सहयोग, आत्म–प्रभावकारिता और किशोर मानसिक स्वास्थ्य : एक बहु–देशीय विश्लेषण. जर्नल ऑफ यूथ स्टडीज, 26(5), 611–628.

- रमेश, पी. (2024). कर्नाटक में किशोरों में अवसाद पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव. इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल रिसर्च, 14(2), 201–214.

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

Cite this Article:

राम विजय चौरसिया और डा0 रत्ना शुक्ला, "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में एक अध्ययन" *The Research Dialogue,* An Online Quarterly Multi-Disciplinary Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal, *ISSN: 2583-438X (Online), Volume 4, Issue 2, pp-252-258, July 2025. Journal URL: https://theresearchdialogue.com/*

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed & Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-04, Issue-02, July-2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number July-2025/25
Impact Factor (RPRI-4.73)

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

राम विजय चौरसिया और डा0 रत्ना शुक्ला

for publication of research paper title

"माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का उनके पारिवारिक वातावरण के संदर्भ में एक अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-02, Month July, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY